मुखिया-पति या अर्दली

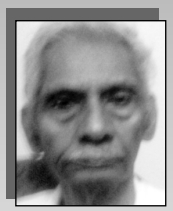

चन्द्रकिशोर जायसवाल

गुरूद्वारा मार्ग, महबूब खां टोला, पूर्णियां-854301.

एक जिला पदाधिकारी के दफ्तर में इलाके के मुखियों की बैठक थी। उस बैठक में कितने ही मुखिया-पति भाग लेने आ गये थे। बैठक में पहले मुखिया-पति ने ज्यों ही अपना परिचय दिया, पदाधिकारी महोदय बिफर उठे, ''भागो यहाँ से; मैंने मुखिया को बुलाया है कि मुखिया के अर्दली को!'' सारे मुखिया-पति बैठक से निकल भागे।

पूरे इलाके में हल्ला हो गया कि मुखिया-पति फूलो झा को जिला पदाधिकारी ने क्या कहकर भगाया।

उस दिन हर मुखिया-पति की पत्नी ने बैठक से भागकर आये हुए अपने पति को किन निगाहों से देखा होगा? 'पति परमेश्वर' या...? पति के परोक्ष होते ही कैसी मुस्कराहट उसके होंठों पर उतर आयी होगी? अब आया ऊँट पहाड़ के नीचे।

अगले चुनाव में मैं भी खड़ी होऊँगी, हर विवाहिता ने मन ही मन यह निर्णय ले लिया होगा।

एक विधुर मुखिया पर तब वज्रपात हुआ जब सरकार ने अगले पंचायत चुनाव में उस पंचायत के मुखिया का पद महिलाओं के लिए आरक्षित कर दिया। अब क्या हो? मुखियागिरी के बगैर वे जिन्दा कैसे रहेंगे? तमाम विरोधों-अवरोधों को धता बताकर उन्होंने शादी का पुख्ता निर्णय ले लिया। वधू की तलाश में चारों ओर विशेषज्ञ दौड़ा दिये गये, दुलहा देखकर कोई बिदके मत, तीन बार के मुखिया की अकूत दौलत को देखे; उसके महल और मोटरगाड़ी को देखे। और सबसे बड़ी बात, शादी के बाद दुलहन की मुखियागिरी पक्की।

सचमुच सबसे बड़ी बात!

'खट्टे नहीं अंगूर' कहानी का एक अंश पढ़ लीजिये, मुखिया और मुखिया-पति के बीच का वार्तालापः

''यह क्या! एक भी धुली साड़ी नहीं है! आपने मेरी साड़ी धुलवायी नहीं थी क्या?''

''धोबी गाँव से बाहर गया हुआ है।''

''मैं तो आपको कहकर गयी थी साड़ी धुलवाकर रखने?''

''हाँ, कहकर तो गयी थी, मगर धुलती कैसे? बिलटा काम का नौकर है, मगर औरत के कपड़े धोने को वह तैयार नहीं।''

''नौकर धोने को तैयार नहीं और धोबी गाँव के बाहर हो, तब तो मेरे कपड़े नहीं धुलेंगे? आप भी गाँव से बाहर चले गये थे क्या? जब आप मुखिया थे, तब बारह-बारह बजे रात में भी मैं आपके कपड़े धोती थी या नहीं? कुछ तो समझ रखिये कि मैं थककर आती हूँ और दिन में मुझे कपड़े धोने का समय नहीं मिलता।''...

''चाय अभी तक नहीं बनी?''

''बन रही है।''

''जब सब उठकर चले जायेंगे, तब बनेगी?''

''बन तो रही है।''

''मुझे बार-बार दरवाजे से उठकर अन्दर आना अच्छा नहीं लगता। दो-चार प्याली चाय बनाना भी आपके लिए पहाड़ हो जाता है। जब आप मुखिया थे, तब मैं दस-दस आदमियों के लिए पलक झपकते चाय तैयार कर देती थी या नहीं? मैं जाती हूँ, चाय लेकर आ जाइयेगा।''..

.''अरेरेरे, यह क्या कर रही हो?''

''देख नहीं रहे क्या?''

''देख तो रहा हूँ, धान तुलवा रही हो; मगर, किसलिए?''

''अब यह भी बताऊँ? बेचने के लिए।''

एक विधुर मुखिया पर तब वज्रपात हुआ जब सरकार ने अगले पंचायत चुनाव में उस पंचायत के मुखिया का पद महिलाओं के लिए आरक्षित कर दिया। अब क्या हो? मुखियागिरी के बगैर वे जिन्दा कैसे रहेंगे? तमाम विरोधों–अवरोधों को धता बताकर उन्होंने शादी का पुख्ता निर्णय ले लिया। वधू की तलाश में चारों ओर विशेषज्ञ दौड़ा दिये गये, दुलहा देखकर कोई बिदके मत, तीन बार के मुखिया की अकूत दौलत को देखे; उसके महल और मोटरगाड़ी को देखे। और सबसे बड़ी बात, शादी के बाद दुलहन की मुखियागिरी पक्की।